अध्याय 12

भारत का भौतिक स्वरूप

परिचय

उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमाद्रिश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तत् भारत नाम, भारती यत्र सन्ततिः।।

भारतीय प्राचीन ग्रन्थ 'विष्णु पुराण' के अनुसार, ''पृथ्वी के उस भू–भाग को जो उत्तर में हिमाद्रि, हिमवान एवं हेमकूट पर्वत तन्त्र से लगाकर दक्षिण में सेतुबन्ध (हिन्द महासागर) तक फैला है और जिसमें भारतीय सन्तति बसती है, को भारत कहते हैं।

प्राचीन काल में आर्यों की भूमि के कारण यह आर्यावर्त के नाम से भी जाना जाता था। ईरानियों ने सिन्धु नदी के तटीय निवासियों को हिन्दू एवं इस भू–भाग को हिन्दुस्थान का नाम दिया। रोम निवासियों ने सिन्धु नदी को इण्डस तथा युनानियों ने इण्डोस व इस देश को इण्डिया कहा। यही देश विश्व में आज भारत के नाम से विख्यात है।

भारत भूमध्य रेखा के उत्तर में $8^{\circ}4'$ से $37^{\circ}6'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $68^{\circ}7'$ से $97^{\circ}25'$ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। कर्क रेखा अर्थात् $23^{\circ}30'$ उत्तरी अक्षांश हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है। यह रेखा भारत को दो भागों में विभक्त करती है। भारत का प्रामाणिक समय $82^{\circ}30'$ पूर्वी देशान्तर रेखा से माना जाता है। यह रेखा इलाहाबाद के पास से गुजरती है।

भारत की विशालता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि इसका विस्तार पूर्व–पश्चिम में 2933 किलोमीटर और उत्तर–दक्षिण में 3214 किलोमीटर है। इसकी स्थलीय सीमा 15200 किलोमीटर और समुद्रीय सीमा 7516.6 किलोमीटर (लक्षद्वीप, अण्डमान एवं निकोबार द्वीपों सहित) है। इसका क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, म्यांमार और बांग्लादेश भारत की स्थल सीमा से जुड़े पड़ोसी देश हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवां बड़ा देश है। भारत की जनसंख्या 121.02 करोड़ (जनगणना–2011 के अनुसार) है। भारत का क्षेत्रफल सम्पूर्ण विश्व के क्षेत्रफल का 2.42 प्रतिशत है, जबकि इसकी जनसंख्या सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या का 17.5 प्रतिशत है।

भारत के भौतिक प्रदेश

भारत की विशालता के कारण यहाँ अनेक भौगोलिक विविधताओं का मिलना स्वाभाविक है। भारत को उपमहाद्वीप की संज्ञा भी दी जाती है। देश के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 10.5 प्रतिशत पर्वतीय भाग, 18.6 प्रतिशत पहाड़ियाँ, 27.7 प्रतिशत पठारी एवं 43 प्रतिशत मैदानी भाग हैं। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत जैसी विशाल श्रृंखलाएँ हैं, जिसमें अनेकों बर्फीली चोटियाँ, सुंदर घाटियाँ व महाखड्ड हैं। भौतिक विभिन्नताओं की दृष्टि से हमारे देश को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है –

1. उत्तरी पर्वतीय प्रदेश,
2. उत्तर का विशाल मैदान;
3. थार का मरूस्थल;
4. प्रायद्वीपीय पठार;
5. समुद्र तटीय मैदान व द्वीप समूह

(1) उत्तरी पर्वतीय प्रदेश– हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा पर पश्चिम से पूर्व की ओर वृहत् चाप के रूप में 5 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। यह क्षेत्र लगभग 2500 किलोमीटर लम्बाई में तथा 250 से 400 किलोमीटर की चौड़ाई में विस्तृत है। यह विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत है। इसका क्षेत्रफल लगभग 5 लाख वर्ग कि.मी. है। यह श्रेणी पामीर पर्वत प्रणाली का भाग है। पश्चिम में पामीर गांठ से निकल कर यह अरूणाचल प्रदेश तक फैली है। भू–गर्भ शास्त्रियों के अनुसार आज जहाँ हिमालय पर्वत श्रेणियों का विस्तार है, वहां पहले टेथिस सागर का विस्तार था। इसमें अवसाद के जमाव के पश्चात् कालांतर में भूगर्भीय हलचलों से जमा अवसाद की परतों में मोड़ पड़ जाने से इस सागर की तली ऊँची उठ गई। इसके फलस्वरूप ही यह नवीन मोड़दार पर्वत श्रेणियां बनी, यथा–

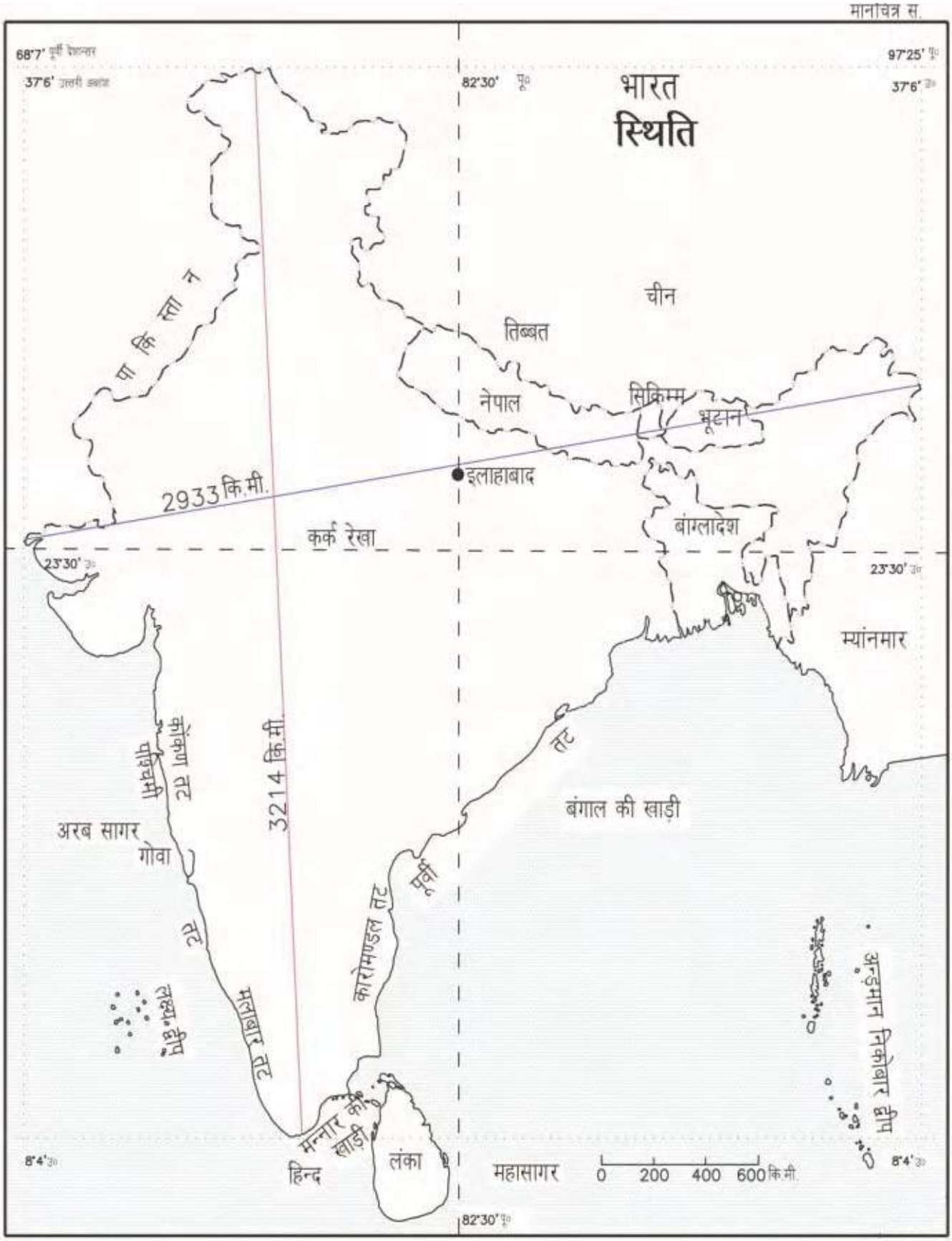

मानचित्र स.

भारत
स्थिति
68°7'
97°25'
37°6'
37°6'
82°30'
23°30'
23°30'
8°4'
8°4'
82°30'
पाकिस्तान
चीन
तिब्बत
नेपाल
सिक्किम
भूटान
इलाहाबाद
2933 कि.मी.
कर्क रेखा
बांग्लादेश
म्यांनमार
3214 कि.मी.
पश्चिमी
कोंकण तट
अरब सागर
गोवा
तट
मलाबार तट
लक्षद्वीप
कोरोमण्डल तट
पूर्वी
तट
बंगाल की खाड़ी
मन्नार की खाड़ी
लंका
हिन्द
महासागर
अण्डमान निकोबार द्वीप
0
200
400
600 कि.मी.

मानचित्र स.

भारत
राजनीतिक
जम्मू एवं काश्मीर
हिमाचल प्रदेश
पंजाब
पाकिस्तान
उत्तराखण्ड
हरियाणा
दिल्ली
चीन
तिब्बत
नेपाल
सिक्किम
भूटान
अरुणाचल प्रदेश
असम
नागालैंड
मेघालय
मणिपुर
त्रिपुरा
मिजोरम
बांगलादेश
राजस्थान
उत्तर प्रदेश
बिहार
गुजरात
मध्य प्रदेश
झारखण्ड
पश्चिम बंगाल
छत्तीसगढ़
उड़ीसा
म्यांनमार
दमन
महाराष्ट्र
तेलंगाना
बंगाल की खाड़ी
अरब सागर
गोवा
आन्ध्र प्रदेश
कर्नाटक
तमिलनाडु
केरल
लक्षद्वीप
अन्डमान निकोबार द्वीप
मन्नार की खाड़ी
लंका
हिन्द
महासागर
0 200 400 600 कि.मी.
68° 72° 76° 80° 84° 88° 92° 96°
36° 32° 28° 24° 20° 16° 12° 8°

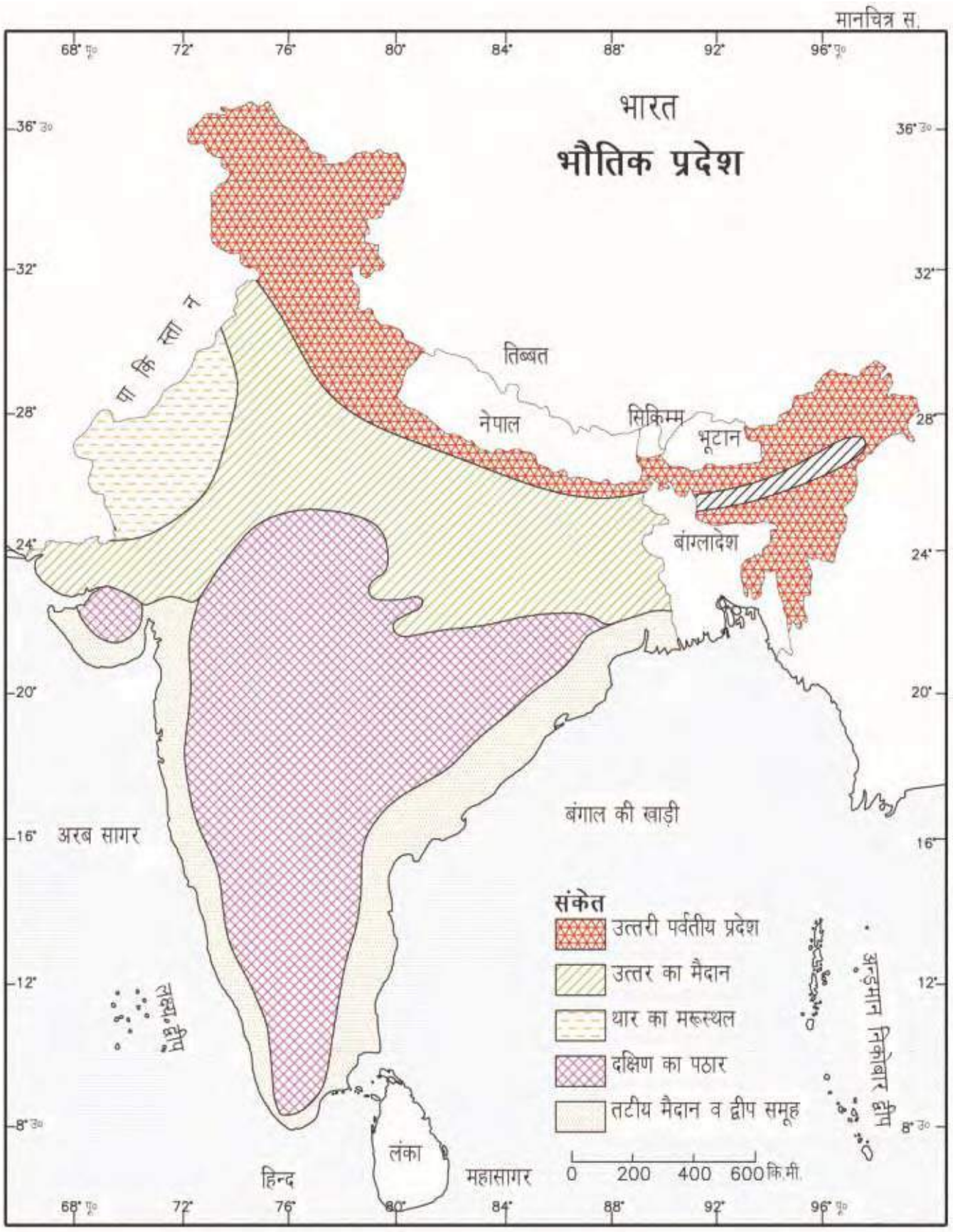

मानचित्र स.

भारत
भौतिक प्रदेश
पाकिस्तान
तिब्बत
नेपाल
सिक्किम
भूटान
बांग्लादेश
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
हिन्द
महासागर
लंका
संकेत
उत्तरी पर्वतीय प्रदेश
उत्तर का मैदान
थार का मरूस्थल
दक्षिण का पठार
तटीय मैदान व द्वीप समूह
0 200 400 600 कि.मी.
अण्डमान निकोबार द्वीप
68° पू०
72°
76°
80°
84°
88°
92°
96° पू०
36° उ०
32°
28°
24°
20°
16°
12°
8° उ०

(1) बृहद् हिमालय–प्रमुख चोटियाँ–गौरीशंकर (माउण्ट एवरेस्ट), कंचनजंघा तथा नंदा देवी

(2) लघु हिमालय–प्रमुख श्रेणियाँ–पीर पंजाल व धौलाधर

(3) उप हिमालय–जम्मू, गिरी, मिसमी, डाफला पहाड़ियां आदि।

1. वृहद् हिमालय :– यह हिमालय की सबसे उत्तरी पर्वतमाला है, जिसे मुख्य हिमालय, हिमाद्री आदि नामों से भी जाना जाता है। यह श्रेणी उत्तर–पश्चिम में सिन्धु नदी के मोड़ से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी के मोड़ तक चाप की आकृति में लगभग 2500 किलोमीटर की लम्बाई में विस्तृत है। इसकी औसत ऊँचाई लगभग 6000 मीटर तथा चौड़ाई 100 से 200 किलोमीटर तक है। यहाँ 40 पर्वतीय चोटियाँ 7000 मीटर से भी अधिक ऊँची हैं। इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट स्थित है। इसकी ऊँचाई 8848 मीटर है। इस पर चढ़ने वाला प्रथम भारतीय महिला बच्छिन्दरी पाल थी। भारत में हिमालय की सबसे ऊँची चोटी कंचनजंघा (8585 मीटर) है। इस श्रेणी में जोजिला, शिपकी, माना, नीति ला आदि दर्रे हैं। इसी प्रदेश से हमारे देश की प्रसिद्ध नदियाँ गंगा व यमुना निकलती है।

2. लघु हिमालय :– यह पर्वत श्रृंखला बृहद् हिमालय के दक्षिण में स्थित है जो मध्य हिमालय या हिमाचल हिमालय के नाम से भी जाना जाता है। इसकी चौड़ाई 80 से 100 किलोमीटर तक है। इसकी औसत ऊँचाई 3000 मीटर है, किन्तु अधिकतम ऊँचाई 5000 मीटर तक पाई जाती है। पीर पंजाल व धौलाधर इसकी प्रमुख श्रेणियाँ है। बनिहाल प्रमुख दर्रा है। यहाँ शीत ऋतु में 3–4 महीने तक बर्फ गिरती है, किन्तु ग्रीष्म ऋतु सुहावनी व स्वास्थ्यवर्द्धक रहती है। यहाँ कई पर्वतीय पर्यटक स्थान जैसे शिमला, मसूरी, नैनीताल, दार्जिलिंग, रानीखेत आदि स्थित है। इस श्रेणी के उच्च ढालों पर कोणधारी वन तथा निम्न ढालों पर घास के क्षेत्र पाये जाते है, जिन्हें काश्मीर में मर्ग (जैसे गुलमर्ग, सोनमर्ग आदि) कहा जाता है।

3. उप–हिमालय :– हिमालय की यह सबसे दक्षिणी श्रेणी है। इसे बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणी के नाम से जाना जाता है। हिमालय की सभी श्रेणियों में यह नवीनतम् रचना है। यह श्रेणी पोटवार बेसिन से प्रारम्भ होकर पूर्व की ओर कोसी नदी तक विस्तृत है। यह श्रेणी 10 से 50 किलोमीटर चौड़ी है तथा इसकी औसत ऊँचाई 600 से 1500 मीटर है। जम्मू में इसे जम्मू पहाड़ियां तथा अरूणाचल में गिरी, मिशमी, अबोर, डाफला पहाड़ियां के नाम से जानते हैं। यह सम्पूर्ण भाग वनाच्छादित है। मध्यवर्ती भाग में हिमालय व शिवालिक के बीच नदियों की मिट्टी व बालू से निर्मित कुछ ऊँचे घाटी–मैदान भी मिलते हैं, जिन्हें पूर्व में द्वार – जैसे हरिद्वार तथा पश्चिम में दून – जैसे देहरादून कहते है।

(2) उत्तर का विशाल मैदान

यह मैदान हिमालय पर्वत तथा प्रायद्वीपीय पठार के मध्य स्थित है। प्राचीनकाल से यह भू–भाग गंगा–सिन्धु मैदान के नाम से जाना जाता है, किन्तु विभाजन के कारण सिन्धु व उसकी सहायक नदियाँ झेलम, चिनाव व रावी के मैदान पाकिस्तान में चले गये हैं। अतः अब भारतीय क्षेत्र को सतलज–गंगा–ब्रह्मपुत्र का मैदान कहते हैं, जो इनके व इनकी सहायक नदियों द्वारा बिछाई गई तलछट मिट्टी से बना है। इस धनुषाकार मैदान की लम्बाई लगभग 2400 किलोमीटर व चौड़ाई 150 से 480 किलोमीटर तक है। इस मैदान का क्षेत्रफल 7 लाख वर्ग किलोमीटर है। 'दोआब' दो नदियों के बीच के भू–भाग को कहा जाता है। इस मैदान में पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, उत्तरी राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड आदि का भाग शामिल है।

(i) उत्तर के मैदान का महत्त्व

काँप (नदी की बारीक) मिट्टी से बनने के कारण यह अत्यधिक उपजाऊ मैदान है, अनेकों नदियों का जाल बिछा होने से पीने व सिंचाई के लिये प्रचुर जल उपलब्ध है। नदियों का उपयोग सस्ते यातायात साधन के रूप में किया गया है। समतल होने से सड़क व रेल मार्गों का सघन जाल है। हमारे देश के अधिकांश औद्योगिक, व्यापारिक व धार्मिक नगर यहीं हैं, जैसे – दिल्ली, कानपुर, हरिद्वार, मथुरा, वाराणसी, अमृतसर, लखनऊ, आगरा, पटना, कोलकाता आदि।

(ii) भौगोलिक वर्गीकरण :–

अ. भाबर प्रदेश :– शिवालिक के पर्वतपदीय क्षेत्र में सतलज नदी से तीस्ता नदी तक 8 से 16 किलोमीटर चौड़ी पट्टी में इसका विस्तार है। पर्वतीय क्षेत्र से निकलकर मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करते ही ढ़ाल के कम होने से नदियाँ भारी

चट्टानों के टुकड़े इस पर्वत पद क्षेत्र में जमा कर देती हैं। इस क्षेत्र में अधिकांश नदियों का भूमिगत प्रवाह होता है।

आ. तराई प्रदेश :– तराई प्रदेश भाबर के दक्षिण में मैदान का वह भाग है, जहाँ भाबर प्रदेश का भूमिगत जल प्रवाह पुनः धरातल पर प्रकट हो जाता है। ढाल की न्यूनता व अनियमित जल प्रवाह के कारण यहाँ दलदल पाये जाते हैं। इस प्रदेश में सघन वन, लम्बी घासें जैसे – कांस, हाथी घास आदि व हाथी व गैन्डे जैसे विशाल वन्य जीव मिलते हैं।

इ. बांगर प्रदेश :– प्राचीन तलछट से निर्मित उच्च मैदान बांगर कहलाते हैं जहाँ नदियों के बाढ़ का जल नहीं पहुँच पाता है। ये उत्तर प्रदेश के उत्तर–पश्चिमी भाग तथा उत्तराखण्ड में अधिक पाये जाते हैं।

ई. खादर प्रदेश :– ये नई तलछट व कांप मिट्टी से बने हुए निचले मैदान हैं जहाँ बाढ़ का पानी प्रतिवर्ष पहुँच कर मिट्टी की नई परत जमाता रहता है। ऐसे मैदानों को खादर कहते है। ये पूर्वी उत्तर–प्रदेश, झारखण्ड, बिहार व पश्चिम–बंगाल में अधिक है।

(3) थार का मरूस्थल

जलवायु परिवर्तन से निर्मित यह मरूस्थल अरावली पर्वत के पश्चिम व उत्तर पश्चिम में सिन्धु के मैदान तक विस्तृत है। यह लगभग 150 से 380 मीटर तक ऊँचा, 640 किलोमीटर लम्बा व 160 किलोमीटर चौड़ा क्षेत्र है। यहाँ तेज हवाएं बालुका–स्तूपों एवं रेत के टीलों का निर्माण करती हैं। इन टीलों के मध्य वर्षा जल भर जाने से यहाँ अस्थायी झीलें बन जाती हैं, जिन्हें ढांढ या रन कहते हैं। यहाँ सांभर, लूणकरणसर, डीडवाना, पचपदरा आदि खारे पानी की मुख्य झीलें हैं। इनमें नमक तैयार किया जाता है। भूगर्भ–शास्त्रियों के मतानुसार यह क्षेत्र पहले उपजाऊ भाग था। यहाँ बड़ी–बड़ी नदियाँ बहती थी। यहां पर सरस्वती नदी के अवशेष मिलना इसका प्रमाण है।

(4) प्रायद्वीपीय पठार

भारत के विशाल मैदान के दक्षिण में विस्तृत अति प्राचीन लावा निर्मित भू–भाग है जो 7 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला है। इसके तीन ओर समुद्र हैं और इस त्रिभुजाकार पठार का आधार उत्तर में विंध्याचल पर्वतमाला तथा शीर्ष दक्षिण में कुमारी अन्तरीप है। दक्षिण–पूर्वी राजस्थान की उच्च भूमि से कन्याकुमारी तक इसकी अधिकतम लम्बाई 1800 किलोमीटर तथा अधिकतम चौड़ाई लगभग 1400 मिलोमीटर है। इस पठार की औसत ऊँचाई समुद्रतल से 600 मीटर है। इसका विस्तार दक्षिण–पूर्वी राजस्थान, गुजरात, झारखण्ड, मध्य–प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आन्ध्र–प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु व केरल में आंशिक रूप से है।

प्रायद्वीपीय भारत को निम्न प्रकार से उप–विभाजित किया जा सकता है –

अ. पश्चिमी घाट – दक्षिण के पठार का पश्चिमी किनारा पश्चिमी घाट के रूप में जाना जाता है। यह उत्तर में सह्याद्रि तथा दक्षिण में नीलगिरी के नाम से जाना जाता है। इनका अरब सागर की ओर ढाल तीव्र तथा पूर्व की ओर धीमा ढाल है। लगभग 1000 मीटर औसत ऊँचाई वाले सह्याद्रि का ताप्ती घाटी से कुमारी अन्तरीप तक क्रमिक विस्तार है। इसमें भोर घाट, थाल घाट व पाल घाट दर्रे हैं। दक्षिण में यह पूर्वी घाट से मिल गये हैं। इसकी सबसे ऊँची चोटी (2637 मीटर) अनाई मूदी है।

आ. पूर्वी घाट :– यह घाट पश्चिमी घाट की अपेक्षा कम ऊँची, तट से काफी दूर स्थित एवं अक्रमिक हैं। यह घाट पूर्वी तट के समानान्तर लगभग 800 किलोमीटर की लम्बाई में फैले हैं। यह उत्तर में महानदी की घाटी से दक्षिण में नीलगिरि पर्वत तक फैले हैं। पूर्व की ओर बहने वाली सभी नदियों ने पूर्वी घाट को काफी छिन्न–विछिन्न कर दिया है। इनकी औसत ऊँचाई 600 मीटर है। 1501 मीटर पूर्वी घाट की सबसे ऊँची चोटियाँ है।

इ. दक्षिणी पठार :– यह अत्यन्त प्राचीन दृढ़ भू–भाग है जिसका निर्माण ज्वालामुखी उद्‌गार से निसृत लावा से हुआ है। उपजाऊ तथा काली मिट्टी युक्त यह पठारी भू–भाग लगभग 5 लाख वर्ग किलोमीटर में विस्तृत है। इसमें दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान, गुजरात, मध्य–प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र–प्रदेश एवं कर्नाटक के भाग सम्मिलित है। इस पठार की औसत ऊँचाई 600 मीटर है। इस पठार का ढ़ाल पूर्व की ओर है इसलिये इस पठार की अधिकांश नदियाँ पूर्व की ओर बहती है। इन नदियों ने इसे

छोटे–छोटे पठारों में विभक्त कर दिया है, जैसे छत्तीसगढ़, मैसूर का पठार, रायल सीमा का पठार, तेलंगाना का पठार आदि।

प्रायःद्वीपीय पठार का महत्व :–

यहां प्रचुर खनिज भण्डार पाये जाते हैं, काली मिट्टी कपास के उत्पादन के लिए लाभदायक है।, यहाँ सागवान, शीशम व चन्दन वाले बहुमूल्य मानसूनी वन मिलते हैं। नदियों में जल–प्रपात मिलते हैं जो जल–विद्युत उत्पादन का आधार है। इसी भाग में पचमढ़ी, महाबलेश्वर उड्गमण्डम (ऊटी) आदि पर्यटन स्थल है।

(5) समुद्र तटीय मैदान व द्वीप समूह

दक्षिण के पठार के दोनों तरफ मैदान स्थित हैं। ये समुद्र तटीय मैदान दो भागों में विभक्त किये जाते हैं। ऐसे मैदान नदियों द्वारा या समुद्र की क्रिया से बने हैं –

(अ) पश्चिमी तटीय समुद्री मैदान – खम्भात की खाड़ी से प्रारम्भ होकर कुमारी अन्तरीप तक फैले इस समुद्र तटीय मैदान की औसत चौड़ाई 64 किलोमीटर है तथा अधिकतम ऊँचाई 180 मीटर है व इसकी लम्बाई 1600 किलोमीटर है। इस तटीय मैदान में तीव्रगामी छोटी नदियाँ बहती हैं। उत्तर में यह मैदान अधिक चौड़ा है। यहाँ नर्मदा, ताप्ती, मंडवी आदि नदियाँ बहती हैं। इस तट के उत्तरी भाग को कोंकण तथा दक्षिणी भाग को मालाबार तट कहते हैं। इसके प्रमुख बन्दरगाह कान्डला, मुम्बई, मारमगोआ, कोचीन व मंगलौर आदि है। इस मैदान में उत्तम जलवायु, उपजाऊ मिट्टी व व्यापार की सुविधाएँ होने से सघन जनसंख्या पायी जाती है।

(आ) पूर्वी समुद्र तटीय मैदान – यह गंगा मुहाने से कुमारी अंतरीप तक फैला है। यह पश्चिम मैदान की अपेक्षा अधिक चौड़ा है। इसकी लम्बाई 1500 किलोमीटर तथा चौड़ाई 16 किलोमीटर से 480 किलोमीटर तक है। इस तट का उत्तरी भाग उत्तरी सरकार तथा दक्षिणी भाग कोरोमंडल तट कहलाता है। महानदी, कृष्णा, गोदावरी व कावेरी यहाँ की प्रमुख नदियाँ है। विशाखापट्टनम्, चेन्नई, पारादीप व तूतीकोरिन यहाँ के प्रमुख बन्दरगाह है। यहाँ चिल्का, पुलीकट व कोलेरू झीलें हैं।

(इ) द्वीप–समूह

भारत के पूर्वी व पश्चिमी तटों तथा अरब सागर व बंगाल की खाड़ी में हमारे देश के अनेक द्वीप हैं। अधिकतर द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में हैं। प्रमुख द्वीप समूह हैं – अण्डमान–निकोबार, लक्षद्वीप, पाम्बन, हेयर, पारिकुद व श्रीहरिकोटा आदि। भारत का दक्षिणतम् बिन्दु ''इन्दिरा पाइंट'' निकोबार द्वीप समूह में है।

(i) अण्डमान निकोबार द्वीप समूह – यह कोलकाता से 1248 किलोमीटर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी में स्थित है। इस द्वीप समूह में लगभग 205 द्वीप हैं। यहाँ के किनारों पर सुन्दरी वृक्ष बहुतायात में मिलते हैं। मुख्य बड़े द्वीप उत्तरी अण्डमान, मध्य अण्डमान, दक्षिणी अण्डमान, बारातंग तथा रूथलैण्ड है। निकोबार द्वीप अण्डमान से 128 किलोमीटर दक्षिण में है। इसके उत्तर के द्वीप को कार निकोबार, मध्य को कामोरटा तथा तानकाडरी एवं दक्षिण को विशाल निकोबार कहा जाता है। इनमें अमिनी द्वीप व मिनीकोई सम्मिलित है।

(ii) लक्षद्वीप :–अरब सागर में भारत के पश्चिमी तट के पास स्थित है। इसका शाब्दिक अर्थ ''एक लाख द्वीप'' है। यहाँ पर नारियल के वृक्ष बहुतायत में मिलते हैं। यह वास्तव में मूंगे के द्वीप है।

राजस्थान के भौतिक प्रदेश

परिचय–

राजस्थान भौगौलिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से विभिन्नता वाला राज्य है। यह भारत के उत्तर–पश्चिम में पतंगाकार रूप में 23°3′ उत्तरी अक्षांश से 30°12′ उत्तरी अक्षांश तथा 69°30′ पूर्वी देशांतर से 78°17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। कर्क रेखा (23°30′ उत्तरी अक्षांश) इसके दक्षिण से गुजरती है। इसकी पूर्व से पश्चिम तक अधिकतम लम्बाई 869 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण तक अधिकतम चौड़ाई 826 किलोमीटर है। इसका कुल क्षेत्र 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, जो कि हमारे देश भारत का 10.43 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से इसका भारत में प्रथम स्थान है।

राज्य की पश्चिमी सीमा का 1070 किलोमीटर भाग पाकिस्तान से अंर्तराष्ट्रीय सीमा बनाता है। इसके पूर्व में उत्तर–प्रदेश व मध्य–प्रदेश, उत्तर में पंजाब व हरियाणा तथा दक्षिण में गुजरात व मध्य–प्रदेश के जिले स्थित हैं। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश में 6,85,48,437 व्यक्ति निवास करते हैं। औसत जनसंख्या घनत्व 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

स्वतंत्रता के बाद 1956 तक राजस्थान का गठन पूरा हुआ। वर्तमान में प्रशासनिक दृष्टि से यह 7 संभागों, 33 जिलों व 244 तहसीलों में बंटा हुआ है। इसके संभाग जयपुर, अजमेर, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा तथा भरतपुर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जैसलमेर सबसे बड़ा व धौलपुर सबसे छोटा जिला है।

राज्य के 33 जिलों के नाम हैं– अजमेर, अलवर, बारां,

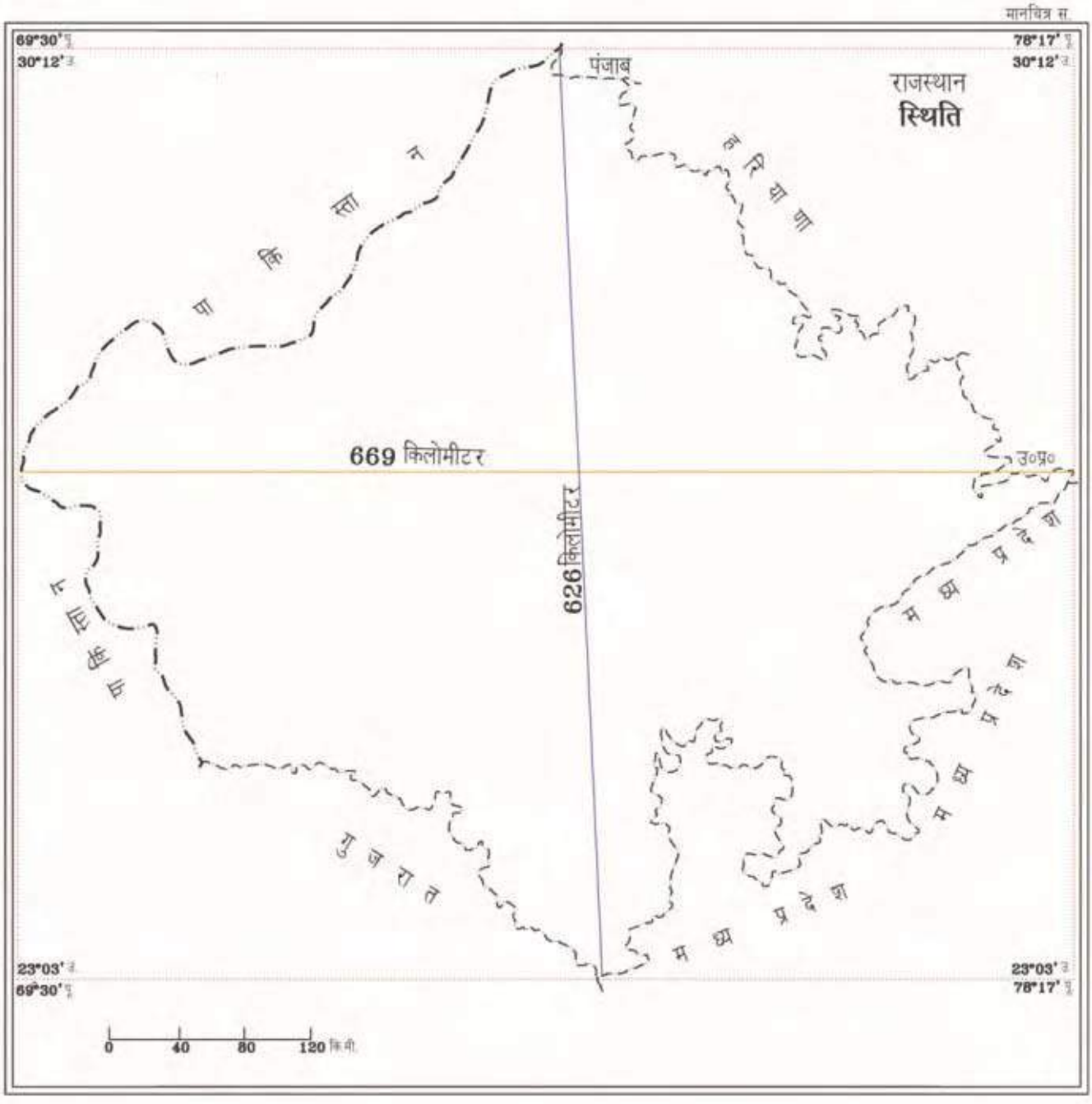

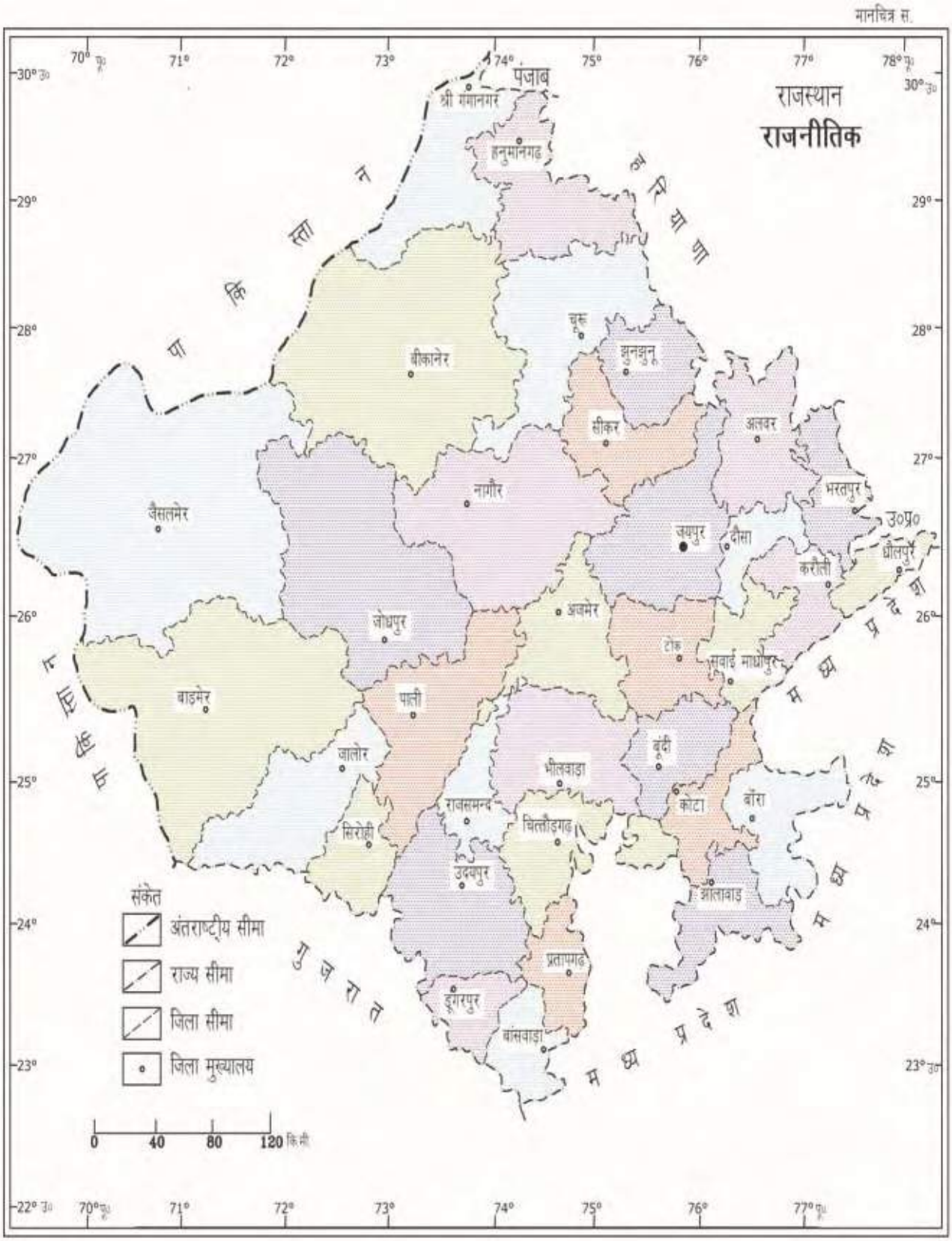

मानचित्र स.

राजस्थान
राजनीतिक
पंजाब
पाकिस्तान
हरियाणा
उ०प्र०
मध्य प्रदेश
गुजरात
श्री गंगानगर
हनुमानगढ़
बीकानेर
चूरू
झुनझुनू
सीकर
अलवर
भरतपुर
धौलपुर
करौली
दौसा
जयपुर
जैसलमेर
नागौर
जोधपुर
अजमेर
टोंक
सवाई माधोपुर
बाड़मेर
पाली
जालोर
सिरोही
भीलवाड़ा
बूंदी
कोटा
बारां
राजसमन्द
चित्तौड़गढ़
उदयपुर
झालावाड़
प्रतापगढ़
डूंगरपुर
बांसवाड़ा
संकेत
अंतराष्ट्रीय सीमा
राज्य सीमा
जिला सीमा
जिला मुख्यालय
0
40
80
120 कि.मी.
70°
71°
72°
73°
74°
75°
76°
77°
78°
30°
29°
28°
27°
26°
25°
24°
23°
22°

बांसवाड़ा, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़, चुरू, धौलपुर, दौसा, डूंगरपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, जालौर, झालावाड़, झुंझुनू, जोधपुर, करौली, कोटा, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सवाईमाधोपुर, सीकर, सिरोही, टोंक व उदयपुर।

राजस्थान का भौतिक स्वरूप

राजस्थान में पर्वत, पठारी, मैदानी व रेगिस्तानी भूदृश्य मिलते हैं। राजस्थान का अधिकांश पश्चिमी एवं उत्तरी–पश्चिमी भाग टेथिस महासागर का ही अवशेष था जो कालान्तर में हिमालय की नदियों द्वारा लाई गई मिट्टियों से पाट दिया गया। टेथिस सागर के अवशेष के रूप में राजस्थान में आज भी सांभर, डीडवाना, पचपदरा, लूणकरणसर आदि में खारे पानी की झीलें मौजूद हैं।

राजस्थान की अरावली पर्वतमाला तथा दक्षिणी पठारी

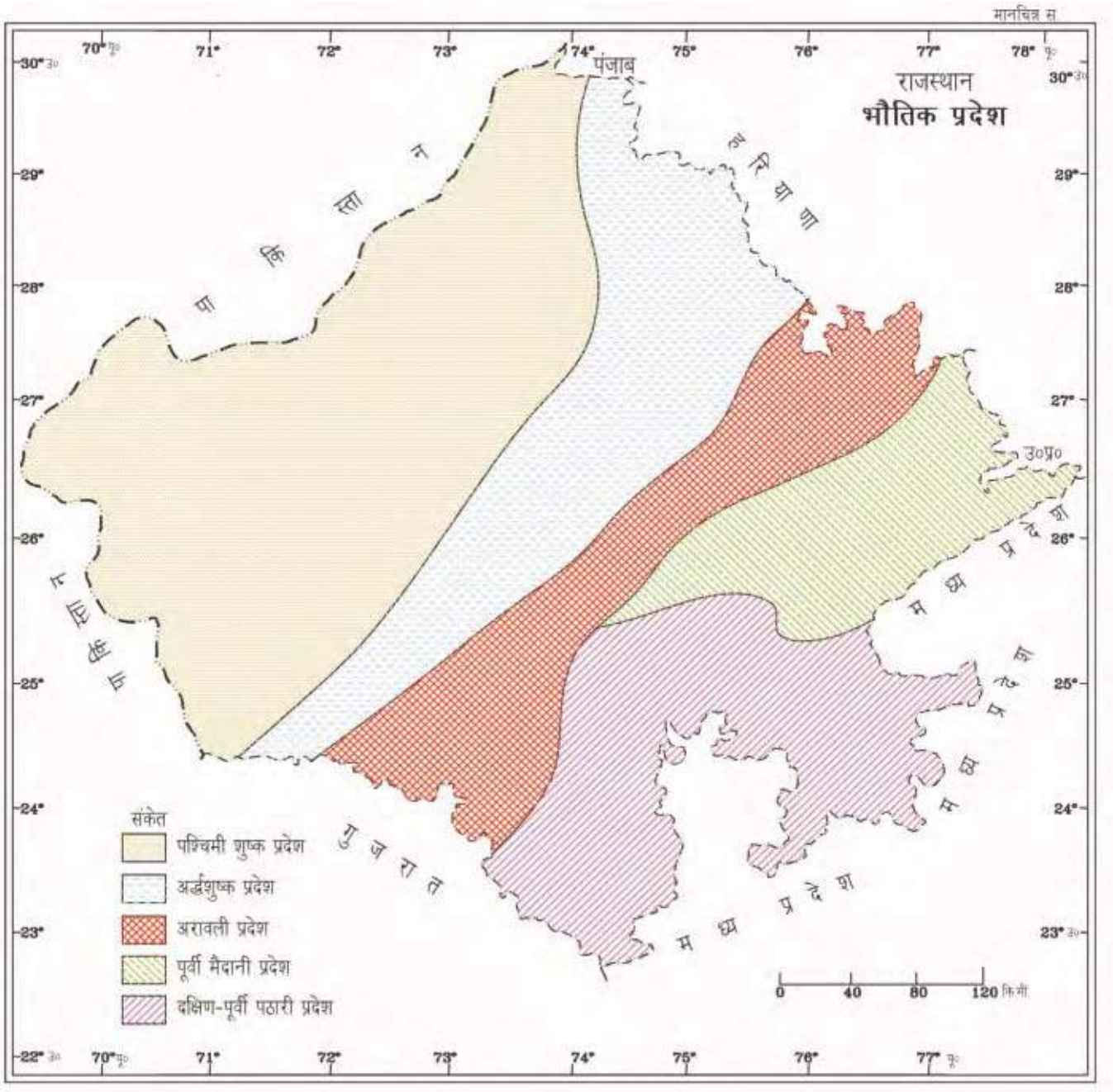

भाग गौंडवाना लैण्ड के भू–भाग हैं। अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम पर्वतमालाओं में से एक मानी जाती है। अरावली पर्वतमाला राज्य की मुख्य जल विभाजक है तथा उसे दो भागों में बाँटती है। राज्य का भौतिक स्वरूप भूगर्भिक हलचलों, भूगर्भिक संरचना, अनाच्छादन एवं जल प्रवाह प्रणाली के मिले–जुले प्रभाव का परिणाम है। राजस्थान के धरातलीय स्वरूप में पर्वत, पठार, मैदान व मरूस्थल पाये जाते हैं, जो प्राचीनतम शैल समूहों से लेकर नवीनतम जलोढ़ से बने है।

राज्य में मिलने वाली भौतिक विविधताओं की दृष्टि से इसको भौगोलिक स्थिति के अनुसार निम्नलिखित पांच भागों में बांटा गया है –

(अ) पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश (आ) अर्द्ध–शुष्क प्रदेश
(इ) अरावली प्रदेश (ई) पूर्वी मैदानी प्रदेश
(उ) दक्षिण–पूर्वी पठारी प्रदेश

(अ) पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश –

यह आकार में सबसे बड़ा प्रदेश है। इसे तीन समानान्तर पेटियों मरूस्थली, बांगर व राही के रूप में बांट सकते हैं जो पश्चिम से पूर्व की ओर विस्तृत है। मरूस्थली में बालूका स्तूपों की अधिकता, बांगर विस्तृत रेतीली मिट्टी के मैदान व राही बाढ़ के मैदान है जो कि छोटी नदियों से बने हैं। इसकी औसत ऊँचाई 300 मीटर है। पूर्वी सीमा 25 सेंटीमीटर की वर्षा रेखा बनाती है। यहाँ बालू की पहाड़ियाँ पायी जाती हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में ''घोरे'' कहते हैं। इंदिरा गांधी नहर के आने से यहाँ की पारिस्थितकीय में बदलाव आया है।

(आ) अर्द्ध शुष्क प्रदेश –

यह अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम तक विस्तृत है। औसत ऊँचाई 450 मीटर है। पश्चिमी सीमा 25 सेंटीमीटर वर्षा रेखा बनाती है। इसके अंतर्गत पाली, जालौर, सीकर, जोधपुर, झुंझुनू, चूरू व हनुमानगढ़ के भाग आते हैं। इसका कुछ भाग आंतरिक अपवाह (प्रवाह मार्ग) का क्षेत्र है। इसे राजस्थानी में बांगड भी कहा जाता है। इसके उप प्रदेश लूनी बेसिन, शेखावाटी भाग, नागौरी उच्च भूमि व घग्घर मैदान है।

(इ) अरावली प्रदेश –

अरावली को आड़ावाला पहाड़ भी कहा जाता है। यह दिल्ली से गुजरात के पालनपुर कस्बे में खेड़ ब्रह्मा तक 692 किलोमीटर लम्बाई में फैला हुआ है। यह विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रेणियों में से है। इसकी ऊँचाई दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर कम होती जाती है। सिरोही जिले में माउन्ट आबू के पास गुरूशिखर इसकी सर्वोच्च 1722 मीटर ऊँची चोटी है। जेम्स कर्नल टॉड ने इसे संतों का शिखर कहा है। यह हिमालय व नीलगिरि के मध्य सबसे ऊँची चोटी है। इसे उत्तर–पूर्वी पहाड़ी, मध्य अरावली, मेवाड़ की पहाड़ियाँ या भोराट पठार तथा आबू पर्वत उपविभागों में बांटा गया है।

(ई) पूर्वी मैदानी प्रदेश –

यह राज्य के पूर्वी भाग में फैला है। इसमें प्रमुखतः चम्बल बेसिन की निम्न भूमि, बनास व माही बेसिन शामिल है। चम्बल बेसिन बाढ़ के मैदान, नदी कगार, बीहड़ व अंतःसरितायें पायी जाती हैं। बनास बेसिन दो भागों में मालपुरा–करौली मैदान व मेवाड़ मैदान में बंटा हुआ है। इसके मध्य माही मैदान को छप्पन का मैदान भी कहते हैं। माही व बनास प्रमुख नदियाँ हैं।

(उ) दक्षिण–पूर्वी पठारी प्रदेश

इसे हाड़ौती पठार के नाम से भी जाना जाता है। यह बारां, बून्दी, कोटा, झालावाड़ जिलों में विस्तृत है। यहाँ काली उपजाऊ मिट्टी की अधिकता पायी जाती है। इस क्षेत्र में चम्बल प्रमुख नदी है। चम्बल पर भैंसरोड़गढ़ के निकट प्रसिद्ध चूलिया जल प्रपात है। भैंसरोड़गढ़ व बिजौलिया के बीच के पठारी भाग को ''ऊपरमाल'' कहा जाता है। चम्बल व इसकी सहायक नदियों यथा काली सिंध व पार्वती से बारां व कोटा में कांपीय बेसिन का निर्माण हुआ है। इस भाग में मुकन्दरा व बून्दी पहाड़ियाँ स्थित है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. हमारे देश को पांच भौगोलिक विभागों में बांटा जाता है– उत्तरी पर्वतीय प्रदेश, मध्यवर्ती विशाल मैदान, थार का मरूस्थल, दक्षिण का पठार तथा समुद्र तटीय मैदान व द्वीप समूह।
2. उत्तरी पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में उपविभाजित किया जा सकता है – महान हिमालय, लघु हिमालय एवं उप हिमालय
3. विशाल मैदान उपजाऊ व समतल होने से सर्वाधिक

घना–बसा है।

4. दक्षिण का पठार विपुल खनिज सम्पदा का भण्डार है।
5. समुद्र तटीय मैदान दो भागों में विभक्त है – पश्चिमी तटीय मैदान, पूर्वी तटीय मैदान।
6. द्वीप समूह – तटीय द्वीप – कांप मिट्टी के द्वीप व पथरीले द्वीप। दूरस्थ द्वीप –पर्वतीय व प्रवाल द्वीप।
7. राजस्थान 23°30′ से 30°12′ उत्तरी अक्षांश तथा 69°30 से 78°17 पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित भारत का सबसे बड़ा राज्य है।
8. राजस्थान के प्रमुख भौतिक विभाग–पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश, अर्द्धशुष्क प्रदेश, अरावली प्रदेश, पूर्वी मैदानी प्रदेश व दक्षिण–पूर्वी पठारी प्रदेश है।
9. अरावली पर्वत श्रेणी की सर्वोच्च चोटी गुरूशिखर है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1.भारत के मध्य से गुजरने वाली रेखा है –
(अ) कर्क रेखा (ब) मध्य रेखा
(स) विषवत् रेखा (द) मकर रेखा

2.उत्तरी पर्वतीय प्रदेश किसका भाग है –
(अ)अरावली का (ब) पामीर गांठ का
(स) आरमीनिया गांठ का (द) कैलाश पर्वत का

3.भारत का सबसे घना बसा भौतिक विभाग है –
(अ) मध्यवर्ती विशाल मैदान (ब) थार मरूस्थल
(स) दक्षिण पठार (द) तीनों ही गलत है

4. भारत का दक्षिणतम बिन्दु इंदिरा पाइंट स्थित है –
(अ) अण्डमान में (ब) निकोबार में
(स) लक्षद्वीप में (द) मिनीकॉय में

5. क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का भारत में स्थान है –
(अ) पहला (ब) दूसरा
(स) तीसरा (द) पांचवाँ

6. राजस्थान का सबसे छोटा जिला है–
(अ) करौली (ब) डूंगरपुर
(स) धौलपुर (द) सीकर

7. नीलगिरि व हिमालय के मध्य सर्वोच्च चोटी है–
(अ) गुरूशिखर (ब) सेर
(स) महाबलेश्वर (द) अचलगढ

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ढांढ़ किसे कहते है ?
2. भारत का सर्वाधिक घना बसा भू–भाग कौनसा है?
3. भाबर कहाँ मिलते हैं ?
4. मर्ग कहां मिलते हैं ?
5. राजस्थान का कुल क्षेत्रफल कितना है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. हिमालय के तीन प्रमुख विभागों के नाम बताइए ?
2. दक्षिण के पठार का महत्व बताइए ?
3. भारत के पूर्वी व पश्चिमी घाट में क्या अन्तर है।
4. भारत के उन द्वीपों के नाम बताइये जो प्रवाह से बने हैं ?
5. पश्चिमी राजस्थान के मरूस्थलीय प्रदेश की विशेषताएं लिखिये ?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. भारत को भौतिक विभागों में बांटिये। किसी एक का वर्णन कीजिये ?
2. उत्तरी पर्वतीय प्रदेश का विस्तार से विवरण दीजिये।
3. दक्षिण पठार के महत्व व विशेषताओं पर प्रकाश डालिये
4. राजस्थान को भौतिक विभागों में बांटते हुये किसी एक का विस्तार से वर्णन करिये।

आंकिक

1. भारत के मानचित्र में प्रमुख भौतिक विभाग दिखाएँ।
2. भारत के प्रमुख ऊँची पर्वत चोटियों को मानचित्र में दर्शाएँ।
3. राजस्थान के मानचित्र में इसके भौतिक विभाग बनाइए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर –

1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (स) 7. (अ)